International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मुगलकालीन भारत में सिंचाई व्यवस्था एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. समीर कुमार वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसरए इतिहास विभाग
सत्यवती कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार–सिंचाई व्यवस्था कृषि का रीढ़ होता है जिससे उस निश्चित भूभाग का कृषि पर निर्भर विभिन्न व्यवस्थाओं का संचालन होता है। भारत एक कृशि प्रधान दे"ा रहा है। अतः यहाँ प्राचीन काल से ही सिंचाई हेतु जल संचयन के लिए तालाबों, जला"ायों का निर्माण करना बाँध बनाकर सिंचाई हेतु नहरों को निकालना आदि की व्यवस्था की जाती रही थी। उपर्युक्त शोध पत्र में मुगलकालीन भारत में सिंचाई व्यवस्था का एक वि"लेशणात्मक अध्ययन किया गया है। सल्तनतकालीन मुस्लिम भासकों की तरह मुगल भी भारत में स्थायी रूप से बस गये। उन्होंने यहाँ की व्यवस्थाओं को अपनाया और व्यवस्थाओं में सुधार भी किये। मुगल भासन काल में 'कृषि' राजकीय आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत था। अतः कृषि विकास हेतु उन्होंने ध्यान दिया इसी क्रम में सिंचाई व्यवस्था हेतु उन्होंने कुओं का निर्माण, तालाब का निर्माण करवाया, नहरें खोदवाई व नहरों का मरम्मत भी करवाया। यदि ध्यान से देखा जाए तो सिंचाई की ज्यादातर व्यवस्था पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में ही सीमित रही।

बीज शब्दः *मुगल शासनकालमें कृशि, सिंचाई व्यवस्था, कूएं, नहरें, तालाब, किसान व राजकीय आय*

प्राचीन काल से ही भारत में कृशि मानसूनी वर्शा पर निर्भर रही है। प्राचीन काल से ही राजाओं ने कृशि हेतु सिंचाई व्यवस्था पर ध्यान दिया। प्रथम मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के अधीन सुदर्शन झील (गिरना, काठियावाड़) जो पानी के मोरी के साथ तैयार किया गया था, द्वितीय–सिंचाई की अधिक सुगमता के लिए अ"ोक के अधीन ग्यारहवीं भाताब्दी में भोज द्वारा निर्मित भोजपुर, मालवा का विशाल जलाशय।[1]सल्तनत काल में फिरोजशाह तुगलक सिंचाई के लिए अनेक बाँधों का निर्माण कराया जिनमें 'रजवह' एवं उलुगखानी नहरें प्रमुख थीं जो क्रमशः यमुना एवं सतलज नहरों से निकाली गई थीं। उसने उपज का दशांश, 'हक–ए–शर्व', अथवा सिंचाई कर के रूप में लिया।"[2]मुगल काल में भारत की सिंचाई व्यवस्था पर सर्वप्रथम बाबर ने अपनी पुस्तक बाबरनामा में उल्लेख किया है। बाबर ने कुंओं से सिंचाई के लिए रहट या अरहट के उपयोग का उल्लेख किया है। तात्कालिक सिंचाई व्यवस्था पर बाबर ने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

'बाबारनरामा' में लिखा है ''लाहौर में झेलम के पूर्व में, दीपालपुर और सरहिन्द में बड़े परिश्रम से प्रयोग किया जाने वाला अरहट या रहट प्रयोग में था। आगरा प्रान्त में चारस का प्रयोग बंधे बैलों द्वारा पानी खींचने के लिये किया जाता था।''[3]फायर ने पानी निकालने की विधियों में ढेकली के प्रयोग को उन स्थानों पर दर्शाया है जहाँ पर पानी अपनी सतह से नीचे चला जाता था। बदायूँनी ने भी उल्लेख किया है कि ''उस समय कुँआ खोदने वालों का ऐसा व्यावसायिक वर्ग भी मिला है जो पानी पीने तथा सिंचाई के उद्देश्य हेतु कुँआ को खोदा करते थे। यह वर्ग आगरा जिला में बासवार के नजदीक था।[4] मुगल काल के समय कुँओं से सिंचाई की व्यापक व्यवस्था थी। लोग रहट के द्वारा कुँओं से पानी निकाल कर नालियों के द्वारा खेतों तक पहुँचाते थे। कुँआ भूजल स्त्रोत का एवं बारहमास सिंचाई का एक स्थायी साधन होता था।

कुँओं के साथ-साथ जलाशयों का भी प्रयोग सिंचाई हेतु होता था। जलाशयों में वर्शा का जल एकत्र होता था, जिसका प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता था। जलाशयों से सिंचाई का प्रयोग मुगलकाल में उत्तर भारत एवं दक्कन में व्यापक रूप से प्रचलित थे। न केवल प्राचीन काल में जलाशयों से कृशि सिंचाई के साक्ष्य मिलते हैं अपितु मध्यकाल में विदेशी यात्रियों ने भी इसका उल्लेख किया है। विदेशी यात्री टेवर्नियर ने मुगलकाल में सम्पूर्ण देश में फैले जलाशयों के रूप में गोलकुण्डा का वर्णन करता है वह कहता है कि ''ये जलाशय बांधों द्वारा बनाये गये होते हैं। कभी-कभी यह बांध डेढ़ मील लम्बा होता है। ऐसा इसलिए होता है कि पानी को प्राकृतिक गढ्ढ़ों में भरा जा सके और शुश्क मौसम में इसका प्रयोग खेतों में किया जा सके।''[5]मुगलकाल में जलाशयों के निर्माण हेतु छोटे-छोटे बांधों के द्वारा वर्शा के जल को जलाशयों में एकत्र किया जाता था और वर्शा ऋतु के बाद जलाशय में एकत्र पानी का प्रयोग सिंचाई कार्य हेतु किया जाता था। जलाशयों हेतु बांधों के निर्माण का कार्य प्रायः भासकों द्वारा किया जाता था। कभी-कभी किसानों को मुगल बादशाहों द्वारा जलाशयों के निर्माण हेतु बांध बनाने के लिए पेशगी भी दी जाती थी। इसका उल्लेख आलमगीरनामा में भी मिलता है-''भाहजहाँ के बाद के वर्शो से यह साक्ष्य मिलता है कि मुगल प्रशासन खानदेश और बरार के पाईनघाट में बांधों को ऊँचा बनाने के उद्देश्य से या बांधों के निर्माण हेतु लगभग 40-50 हजार रूपये किसानों को पेशगी देने का प्रस्ताव रखा था।''[7] कर्नल टाड ने भी उल्लेख किया है कि ''मेवाड़ के उ>र में उदयसागर का प्रसिद्ध जलाशय इस समय में भी मौजूद है और इस क्षेत्र में गेहूँ उत्पादन में सहायता प्रदान करता है। कर्नल टाड बांध के असाधारण महत्व और सामर्थ्य को बताता है कि यह वास्तव में बारह मील की परिधि में पानी के प्रवाह को बनाये रखने के लिए आवश्यक एवं समर्थ है।''[8]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सिंचाई की कृत्रिम व्यवस्था जैसे कुँआ द्वारा तालाबों के लिए बाँध बनाकर एवं नहरों द्वारा सिंचाई के अतिरिक्त बाढ़ वाले क्षेत्रों में नदियों द्वारा ऊपजाऊ मिट्टी लायी जाती थी। जलप्लावित नदियों के द्वारा भी बाहर क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से सिंचाई कर दी जाती थी जिसका उल्लेख अबुल फजल ने भी किया है। अबुल फजल लिखते हैं कि ''जल-प्लावन कही जाने वाली जल-प्लावित नदियों द्वारा प्रतिवर्श ऋतुकाल में खेतों की सिंचाई और मिट्टी की नई ताजी परत की उत्पत्रि मिट्टी के ऊपजाऊपन को बढ़ाता है। उस समय भूमि के ऊपजाऊपन का यह प्राकृतिक नियम था। इस प्रकार की भूमि अवध में तथा संभल जिला (ऊपरी रूहेलखण्ड) में सरू (सरयू) और घाघरा द्वारा सींची जाती थीं।''[9]पंजाब में इस प्रकार की सिंचाई और जल-प्लावन व्यास और सतलज नदियों के जल-प्लावित होने से होती थी। ये दोनों नदियां एक-दूसरे से 30 मील की दूरी पर होते हुए लगभग 200 मील बहकर सम्भवतया वर्तमान पंचनर और सतलज के संगम पर मिलती थी। इससे उस क्षेत्र की भूमि को अधिक ऊपजाऊपन प्राप्त होता था जो इन दो नदी तालों के समीप होती थीं।[10]मानव निर्मित नहरों के अतिरिक्त मुगलकाल में प्राकृतिक नहरें भी सिंचाई के साधन के रूप में प्रयोग होती थीं-यह प्रमाणित तथ्य है कि मुगलकाल के दौरान ऐसी अनगिनत प्राकृतिक नहरें विद्यमान थीं जो नदी-मुखों से जुड़ी हुई थीं।[11] इरफान हबीब महोदयने मुगलकाल में दक्कन क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से नहरों के द्वारा सिंचाई का उल्लेख किया है वे लिखते हैं कि ''दक्कन में नहरों को नदी तालों से काटकर सिंचाई के लिए पानी संचित किया जाता था। उदाहरणार्थ बगलाना में वे कृशि के लाभ हेतु ऐसी हजारों नहरों को प्रत्येक भाहर और गाँव में लाये थे जो नदियों से कटी हुयी थीं।''[12]मुगलकाल में नदियों से नहरों को निकालने एवं नालों का निर्माण करने का भी व्यापक साक्ष्य प्राप्त होता है, इनके द्वारा सिंचाई कार्य हेतु किसानों को आसानी से नदियों का जल प्राप्त हो जाता था। ऐसा उल्लेख मिलता है कि ''मुगलकाल में विशाल नदियों की खुदायी का प्रमाण हम उत्रारी भारत में पाते हैं। एक परम्परागत मान्यता है कि भााहजहाँ के भाासनकाल में पूर्वी यमुना नहरों से प्राचीन नाला खोदा गया था और वह 18वीं भाताब्दी के प्रारम्भ तक प्रयोग में था।''[13]

फिरोजशाह तुगलक द्वारा निर्मित नहरों को मुगल बादशाहों द्वारा मरम्मत कराने का उल्लेख भी मिलता है। अकबर एवं भााहजहां ने उन नहरों का पुननिर्माण कार्य करवाया व उससे सिंचाई व पेयजल के लिये जनता को पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करवायी। तत्कालीन इतिहासकारों ने भी इसका व्यापक रूप में उल्लेख किया है। वे लिखते हैं-''यमुना के उस पार फिरोजशाह की प्रसिद्व नहरें थीं, फिरोजशाह के यमुना नहरों के सविस्तार अध्ययन किये बिना ही यह कहा जा सकता है कि यह जिजिवाला (अम्बाला जिला) से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नीचे इन्द्री (करनाल जिला) तथा कृशि भूमि को सींच चुकी थी। पंजाब, हिसार, फिरोना आदि प्रदेशों में फिरोजशाह की अन्य नहरें महत्वपूर्ण थीं। फिरोजशाह की यमुना नहरों की मरम्मत तर्खा द्वारा किया गया था।''[14] मोरलैण्ड ने भी फिरोजशाह तुगलक द्वारा निर्मित नहरों का भाहजहां के द्वारा पुनर्निमाण कराने का उल्लेख किया है। मोरलैण्ड लिखते हैं कि ''शाहजहां के समय में यह नहर पुनः बन्द हो गयी थी तब भाहजहाँ ने इसके मुख को खिजीरा-मुख से नीचे साफडान तक पुनः खुलवाने का निश्चय किया और इस प्रकार उसने दिल्ली में शाहजहाँनाबाद भाहर की सेवा के लिए वहाँ तक 78 मील लम्बाई वाला नाला खोदवाया।''[15]मुगलकालीन कृषि एवं सिंचाई व्यवस्था पर इरफान हबीब ने भी काफी अध्ययन किया हुआ है, वे लिखते हैं कि-''यह नाला मुगलकाल की एक उपलब्धि माना गया है। बाढ़ के दौरान भी मुख्य नदियों के पानी द्वारा उन नालों में उनके पानी के प्रवाह पर दबाव डालने के बावजूद भी ये नाले सक्रिय रहते थे। बहुत सी ऐसी प्राकृतिक नहरें मुगलकाल में बिल्कुल लम्बी थीं।''[16]

पंजाब का क्षेत्र पाँच नदियों से सिंचित क्षेत्र था। इस क्षेत्र में सिंचाई की व्यवस्था हेतु मुगल बादशाहों ने छोटी-छोटी नहरों का निर्माण करवाया। इन नहरों के निर्माण से पंजाब के ऊपरी दोआब क्षेत्रों में सिंचाई की बेहतर व्यवस्था विकसित हुई और अन्ततः कृशि का उत्पादन बढ़ा।-जैसा कि इतिहासकारों ने भी लिखा है कि ''पंजाब में ऊपरी बारी दोआब में नहरों का निर्माण छोटे पैमाने पर किया गया था। इस प्रकार के नहरों मे भाहजहाँ की भाह नहर सबसे अच्छा उदाहरण है। यह भाह नहर, राजपुर (शाहपुर) से लाहौर तक 84 मील दूरी तय करती थी।''[17]मुगल बादशाहों ने केवल नहरों का निर्माण करवाया अपितु नहरों के रख-रखाव एवं देख-रेख हेतु अलग से भासकीय व्यक्तियों की भी नियुक्ति करते थे। इसका उल्लेख इतिहासकार बेनीप्रसाद वर्मा ने भी किया है। वे लिखते हैं कि ''मुगलकाल का प्रशासनिक रिकार्ड एक ऐसा नियम दर्शाता है जो मुल्तान जिला के लिए एक भासकीय भोर-ए-आब (नहर अधीक्षक) की नियुक्ति से सम्बन्धित है। उसे नये नहरों की खुदाई कराने, पुरानी नहरों की सफाई कराने और बाढ़-वृश्टियों पर बांध बनवाने का निर्देश दिया गया था। साथ ही साथ उसे किसानों में नहरों के पानी का समान रूप से वितरण करने के लिए ध्यान देने का भी निर्देश दिया गया था।''[18]

मुगलकालीन सिंचाई व्यवस्था का व्यापक एवं व्यवस्थित वर्णन नहीं प्राप्त होता है। अतः अभी तक के प्राप्त वर्णनों एवं साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस समय कुंओं से सिंचाई होती थी। बाबर ने स्वयं 'रहट' का उल्लेख किया है। सिंचाई व्यवस्था हेतु तालाबों का एवं नहरों का भी प्रयोग होता था। सिंचाई हेतु प्रायः प्राकृतिक रूप से मानसूनी वर्शा एवं तालाबों पर ही किसान निर्भर रहते थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मुगलकाल में सूखा एवं अकाल का भी उल्लेख प्राप्त होता है। सभी किसानों एवं कृशि योग्य भूमि तक सिंचाई व्यवस्था द्वारा जल नहीं पहुँच पाता था। किसानों को अपनी फंसल बोने के बाद प्रायः वर्शा जल पर ही निर्भर रहना पड़ता था। हालांकि मुगल साम्राज्य इतना व्यापक एवं विस्तृत था कि सभी कृशि योग्य भूमि तक सिंचाई की सुविधा पाना भी संभव नहीं था। आजादी के 75 वर्श बाद भी आज भी भारत में कृशि योग्य भूमि का सिंचित क्षेत्रों का एक तिहाई प्रतिशत ही है।

मुगल बादशाहों ने सिंचाई व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण कार्य को अनदेखा भी नहीं किया। भाहजहाँ के भासनकाल में बार-बार पड़ने वाले अकालों को उसने ध्यान में रखा और उसने फिरोजशाह के समय निर्मित नहरों का पुनर्निमाण करवाया। भाहजहाँ ने नवीन नहरों का भी निर्माण करवाया। फसलों को सूखे से बचाने में इन नहरों, जलाशयों एवं सिंचाई के साधनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इरफान हबीब ने द्वारा निष्कर्ष रूप में कहा गया है कि ''मध्यकालीन नहरों में हुई महान उन्नति के विशय में कोई सन्देह नहीं हो सकता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण सिन्धुघाटी और ऊपरी गंगा के समतल भागों में आधुनिक नहरों के महान नेटवर्क के निर्माण द्वारा दर्शाया जा सकता है।''[19]

सन्दर्भ

1. भास्त्री, एन0-कम्प्रेहेन्सिब हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृ. 281-282
2. जे0 एम0 बनर्जी, हिस्ट्री ऑफ फिरोजशाह तुगलक पृ. 380
3. बेबरीज, ए0 एस0-बाबरनामा पृ. 387-88
4. तदैव, पृ. 387
5. बदायूँनी-मुन्तखब-उत-तवारीख, पृ. 243
6. हबीब, इरफान-दि अग्रेरियनसिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, पृ. 28
7. औरंगजेब-आदाब-ए-आलमगिरी, पृ. 53
8. टाड, कर्नल-एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, पृ. 619
9. फजल, अबुल-आइने-अकबरी पृ. 433
10. तदैव पृ. 549

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

11. जर्नल ऑफ सिन्ध हिस्टोरिकल सोसाइटी–1937, पृ. 15–16

12. हबीब, इरफान–दि अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, पृ. 38

13. सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर–1909, पृ. 56–60

14. बदायूँनी–मुन्तखब–उत–तवारीख, पृ. 196

15. मोरलैण्ड–इण्डिया फ्रॉम अकबर टू औरंगजेब, पृ. 196

16. हबीब, इरफान–दि अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, पृ. 32

17. लाहौरी, अब्दुल हमीद–शाहजहाँनामा, पृ. 168–69

18. बेनी प्रसाद–,मस्सिर–उल–उमरा, पृ. 806–07

19. हबीब, इरफान–दि अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, पृ. 36–37